08 / 01 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

देह धर्म के पर्दे को पार कर निरंतर सेवाधारी बन उडती कला का अनुभव

➢➢ नंबर वन की सीट की अधिकारी, मैं निरंतर सेवाधारी आत्मा...

➳ _ ➳ क्योकि मैंने... देह और धर्म के परदे के बाहर भी...

➳ _ ➳ बाप को पहचाना हैं...

→ सतयुगी दुनिया की स्थापना के लिए...

→ निमित्त बनी आत्माओं के वृक्ष की...

→ मैं आधार मूर्त आत्मा हूँ...

→ मैं निरंतर सेवाधारी आत्मा हूँ...

- स्वसेवा और विश्वसेवा की...
- डबल ताजधारी आत्मा...
- उडती कला में रहने वाली,
- मैं उड़ता पंछी...
- मैं बंधन मुक्त आत्मा...
- देह और देह की दुनिया से...

- सदा उपराम...
- सदा योगयुक्त,
- सदा फ़रिश्ता स्वरूप...

➳ _ ➳ कमल पुष्प के आसन पर विराजमान...

➳ _ ➳ डबल ताज धारी मैं आत्मा....

→ उड़ता पंछी बन मैं आत्मा...

→ उड़ चली इस सूक्ष्मवतन की ओर...

- साक्षी होकर देख रही हूँ मैं आत्मा,
- अपने पीछे छोड़ी हुई दुनिया को...
- इन ऊँचे ऊँचे पर्वतों के समान,
- ये राह की रुकावटें...
- ये बड़ी बड़ी नदियाँ,
- ये ताल पोखर,
- ये अंधेरी खाइयाँ...
- ये सागर में लहरों के ज्वार,
- घने बीहड़ वन
- और ऊँची भव्य इमारतें...

- ये देह, धर्म, देश, जाति के बंधन
- और संबंधो की बेड़ियाँ...

→ सब नन्ही चीटियों की रेखाओं के समान लग रहे हैं...

→ हर बाधा से पार हूँ, मैं हर आकर्षण से दूर हूँ...

➳ _ ➳ अपार आनंद का अनुभव करती मैं आत्मा...

➳ _ ➳ इस आकाश के विस्तार को जी भर कर जी रही हूँ...

➳ _ ➳ नील गगन से पार मैं आत्मा पहुँच जाती हूँ अब सूक्ष्म वतन में...

→ सूक्ष्म वतन में एक ऊँची सी पर्वत की चोटी...

→ चोटी पर खड़े बापदादा...

→ सामने ही पहाड़ी पर...

→ विश्व ग्लोब जैसी कोई आकृति दिख रही हैं...

→ ग्लोब पर निरंतर शांति पवित्रता

→ और शक्तियों का प्रकाश फैलाते बापदादा...

→ निरंतर सेवाधारी मेरे बापदादा...

→ डबल ताजधारी मेरे ब्रह्मा बाबा...

→ मैं आत्मा देख रही हूँ स्वयं को,

→ अब बाप दादा के सम्मुख...

- बाप दादा स्नेह से मुस्कुरा रहे हैं...
- रूहानी सेवाधारी का तिलक...
- मेरे मस्तक पर लगा रहे हैं...
- मनसा, वाचा, कर्मणा
- मैं आत्मा मायाजीत बन रही हूँ...

➳ _ ➳ मायाजीत मैं आत्मा अब एक संकल्प लेकर...

➳ _ ➳ उड़ चली परमधाम की ओर...

→ शिव पिता से शक्तियों को स्वयं में समाकर...

→ मैं आत्मा लौट आई हूँ अपनी देह में...

- अब मैं आत्मा...
- बाप समान निरंतर सेवाधारी...
- गुड मोर्निंग से लेकर गुड नाईट तक...
- हर पल बाप दादा साथ है...
- जैसे निरंतर योगी...
- वैसे ही निरंतर सेवाधारी भी...

→ मैं आत्मा, अब लास्ट सो फ़ास्ट से...

→ नम्बर वन की अधिकारी आत्मा...